ISSN: 2393-8900 IMPACT FACTOR : 1.9152(UIF) VOLUME - 4 | ISSUE - 3 | NOVEMBER - 2017

HISTORICITY RESEARCH JOURNAL

तालों में बंद प्रजातंत्र में सामाजिक संदर्भ

प्रा.डॉ.गंगाधर धुळप्पा बिराजदार
हिंदी विभाग प्रमुख, दयानंद कला एवंशास्त्र महाविद्यालय, सोलापूर.

प्रस्तावना :

विभुकुमार साठोत्तरी काल के प्रसिध्द नाटककार है। हिंदी के युवा नाटककारों में उनका नाम प्रतिष्ठा से लिया जाता है। उन्होंने हिंदी में स्नातकोत्तर उपाधि सागर विश्वविद्यालय से प्राप्त की और दुर्गा महाविद्यालय रायपुर में अध्यापन का कार्य किया। वे सृजनकार्य में भी जुटे रहे। उनके दो कहानीसंग्रह है १) सही आदमी की तलाश, २) मेरे साथ यही तो दिक्कत है। और इसके अलावा पाँच नाटक है १) तालों में बंद प्रजातंत्र, २) हवाओं का विद्रोह, ३) कहे ईसा सूने मूसा, ४) अपरिभाषित, ५) मुन्नीबाई

सन १९७१-७२ में भारत की आजादी की २५ वी साल गिरह मनाने की धूम मची थी। भारत आजाद हुए २५ साल हुए थे। स्वतंत्रता के समय १९४७ के आसपास भारत ने लोकतांत्रिक प्रणाली को अपनाकर एक आदर्श लोकतंत्र बनाने की और भारतीय समाज को सुख-समृध्द बनाने के कई स्वप्न देखे थे। पंडित जवाहरलाल नेहरु के काल के बाद में भी इस दिशा में पंचवर्षीय योजनाँए सामने आ गई। सन १९७०-७२ तक आते -आते भारत कृषि, विज्ञान, टेक्नोलॉजी, जनसंचार इत्यादी क्षेत्रों में विकास के चरण नापने लगा था। इन क्षेत्रों में भारत की अपनी एक अलग पहचान बनी थी। पंचवर्षीय योजना का कार्यान्वयन हो रहा था। सन १९६० के बाद भारतीय समाज और राजनीति में स्वप्नभंग की स्थिति पैदा हुई और सामाजिक, राजनीतिक पतन या असंगति के दर्शन समाज में होने लगे और आजादी के बाद २५ साल का समाज और चिंतकों के लिए आत्मान्वेषण की घडी थी। एक संवेदनशील रचनाकार के नाते विभुकुमार के सामने भी अनेक सवाल उठ रहे थे। उन्हें लगा कि अब साहित्य को इन सवालों से दूसरे स्तर पर जूझना चाहिए। इस मोर्चे का सही चित्रण करने के लिए विभुकुमार के सामने विधा थी-नाटक। इस समय नुक्कड नाटक की लोकप्रियता बढ रही थी। विभुकुमार ने भी दो नुक्कड नाटक लिखे- 'भिखमंगे' और 'मुखौटे'। इन दोनों नाटकों का प्रत्यक्ष संबंध हमारी व्यवस्था से था। उसमें व्यवस्था पर तीखा व्यंग्य किया था। आसपास कुछ हलचल-सी मच गई। व्यवस्था भी थोडी चौकन्नी हुई। विभुकुमार इस शैली या विधा की शक्ति से परिचित हो गए। तभी आ गई २५ वी सालगिरह। मित्रों के साथ चर्चा करने पर तय हुआ कि १५ अगस्त १९७२ को एक नुक्कड नाटक खेला जाए और उसे नाम दिया गया- 'तालों में बंद प्रजातंत्र'। उस पर विचार-विमर्श हुआ। थीम डिस्कस की गई और लिखने का दायित्व विभुकुमार पर सौंपा गया। मंथन के बाद यह नाटक १९८१ में प्रकाशित हुआ।

सामाजिक संदर्भ :- सामाजिक परिस्थिति, समाज में अंतर्भूत संख्याओं से संबंधित तथ्य या समस्याओं का चित्रण साहित्य में 'सामाजिक संदर्भ' के अंतर्गत समाविष्ट होता है।

सामाजिक संदर्भ को विवेचन की सुविधा के लिए निम्नलिखित पक्षों में विभाजित किया गया है।

१) राजनीतिक पक्ष, २) पारिवारिक पक्ष, ३) धार्मिक पक्ष ४) सांस्कृतिक पक्ष
५) आर्थिक पक्ष ६) शैक्षणिक पक्ष

इन पर विचार करने से पहले इस नाटक की कथावस्तु पर एक दृष्टि डालते हैं।

प्रस्तुत नाटक एक प्रयोगात्मक नाटक है। आजादी मिले हमें कई साल हो गए। फिर भी हमारा प्रजातंत्र तालों में बंद है और इन तालों की चाबियाँ विविध पक्षों के पास है और वे चाबियों का अपने मन के अनुसार इस्तेमाल करते हैं। ताला खोलते हैं और देखने से पहले दुबारा बंद करते हैं। अंत में स्थिति में परिवर्तन होता है। युवक नेताओं से चाबियाँ छिन लेते हैं। ताले खोलने के पश्चात् उस बक्से में से एक कुर्सी और एक नर-कंकाल निकलता है। यहाँ कुर्सी सत्ता का प्रतीक है और नर-कंकाल सर्वसामान्य व्यक्ति का।

अब प्रस्तुत नाटक 'तालों में बंद प्रजातंत्र' में चित्रित सामाजिक संदर्भो को देखेंगें

सामाजिक संदर्भ :- आज का युवक दिशाहीन हो गया है। उसके विद्रोह को सही दिशा और नेतृत्व नहीं मिल रहा है। पहला युवक कहता है, "वो इसलिए कि हम अपने को कहीं भी सार्थक नहीं पाते / हमें लगता है कि हम मिसफिट है, बल्कि मेरा तो यहाँ तक कहना है कि वह व्यवस्था हमें जान- बूझकर मिसफिट करने पर तुली है "[१]

आज का युवक कर्मठ और चुस्त नहीं है। उसमें समस्याओं से जूझने की प्रवृत्ति नहीं है। वह कमजोर क्षीण बन गया है। जिंदगी से पलायन करना चाहता है। उसे अब केवल मृत्यु का ही इंतजार है। वहान अच्छी तरह से जी सकता है और न मर सकता है। दूसरा युवक कहता है," मुझे तो लगता है कि पूरा का पूरा देश जैसे एक बोगदे में बंद है, जहाँ न हवा है, न रोशनी और न पानी। बस, इंतजार है मृत्यु का।"[२]

देश के सामने आज युवकों की बेरोजगारी की गहन समस्या है। युवक आशावाद पर निर्भर है। उसे अपने कार्य पर विश्वास नहीं रहा। वह केवल कल्पना में जी रहा है और किसी चमत्कार के इंतजार में है। दूसरा युवक कहता है, "यार, कुछ भी घटे, पर ऐसा घटे जिसकी हमने कभी कल्पना न की हो, वरना कोई चार्म नहीं रहता लाइफ में ।"[३] आज के युवक में आदर्श, नैतिकता का अभाव मिलता है। वह अनेक दृष्कृत्यों को अपना रहा है, जैसे -सिगरेट पीना, लडकियों की को छेडना आदि।

आज के युवकों में स्वावलंबन की प्रवृत्ति भी नहीं मिलती है। वह नौकरी की ओर ही आत्कृष्ट हो रहा है। वह काम-धंदा करना नहीं चाहता। प्रस्तुत नाटक में राहगीर का बेटा पढा-लिखा है, पर बेकार है। इसलिए तीसरा व्यक्ति राहगीर से कहता है, "फिर लडका पढा-लिखा है। उससे कहो, कुछ काम धंदा करे। अरे आखिर कितनी नौकरी लाएगी सरकार। आदमी को स्वावलंबी होना चाहिए।"[४]

आज दहेज प्रथा बडी समस्या बन गई है। गरीब पिता के घर जन्मी लडकी का जीवन नर्क बन रहा है। प्रस्तुत नाटक में तीसरा युवक गरीब है, इसलिए वह अपनी बहन की शादी करने में असमर्थ है। वह पहले युवक से कहता है, "जमने को क्या है यार। पैसा है तो सब जम जाता है।"[५] आजकल लडको की प्यार-मोहब्बत करने की प्रवृत्ति और शादी कहने पर फौरन माँ-बाप पर बात डालकर टालने की प्रवृत्ति भी मिलती है।[६]

आज परिवार में अटूट, घनिष्ठ संबंध नहीं रहे। प्रस्तुत नाटक में दूसरा युवक अपनी पदोन्नति के लिए पत्नी (लडकी) का इस्तेमाल करने की सोच रहा है। दूसरा युवक अपनी पत्नी (लडकी) से कहता है, "(झिझकते हुए) कह रहा था, ... कहता था ..... तुम्हारी पत्नी बडी सुंदर है। और ..... "[७] परिवार में आज नारी भी विवशता महसूस कर रही है प्रस्तुत नाटक में लडकी अपने बच्चे का पेट पालने में असमर्थ है। इसलिए वह मैनेजर के हाथों अपना सर्वस्व गँवाने के लिए तैयार हो जाती है। वह कहती है, " ठीक है, मैं तैयार हूँ। अपने बच्चे के लिए यह भी करुँगी।"[८]

आज समाज में रिश्वत की समस्या जड पकडी हुई है। सर्वसामान्य व्यक्ति के पास नौकरी की योग्यता होने पर भी उनसे रिश्वत की माँग की जाती है। नेताओं के सिफारिश पत्र की माँग की जाती है। रिश्वत न देने पर उन्हे नौकरी से हाथ धोना पडता है। प्रस्तुत नाटक में लडकी भी इसी परिस्थिति से गुजर रही है। वह कहती है "मुझसे कहा, नहीं। कुछ खर्च-वर्च कर सकती हो। मेरा वही उत्तर था। उसके बाद उसने क्या कहा जानते हो ? यानी व्यक्तिगत मामला है। व्यक्तिगत सिफारिशी पत्र में घर पर इन्टरटेन किया करता हूँ। आफिस आवर्स के बाद यदि चाहो तो आ जाना। देख लूँगा, तुम्हारे केस में दम है या नहीं। "[९] इस प्रकार नारी को रिश्वत और नेता की सिफारिश पत्र देने में असमर्थ पाकर उसके इज्जत के साथ खिलवाड किया जाता है।

आज औद्योगिक क्षेत्र में युनियनबाजी बढ रही है। यह युनियन अपनी माँगे पूरी न होने पर हडताल, दंगा-फँसाद कराती है। एक ही मिल में अनेक युनियने दिखायी देती है। इससे मजदूर वर्ग भ्रम में हैं। वह यह समझ नहीं पाता कि किस युनियन में प्रवेश करें। ये युनियने भी एक हडताल के पक्ष में होते है। दूसरों नहीं और तीसरे मौका परस्त। प्रस्तुत नाटक से दूसरा युवक लडकी से कहता है, "तुम्हें तो मालूम है फॅक्टरी में हडताल होने को है। तुम तो जानती हो कि मैं युनियनबाजी के चक्कर में नहीं पडता । फिर साली एक युनियन हो तो कोई सोचे भी। यहाँ तो तीन-तीन है। एक हडताल के पक्ष में है, दूसरी नहीं है और तीसर मौका परस्त।"[१०]

आज का नेता सच्चे दिल से जनता का भक्त, देशभक्त नहीं रहा । वह जनता को गुमराह कर रहा है। वह जनता को मूर्ख समझता है। तीसरा व्यक्ति कहत है, "ये बात और है कि इसके खुलने के बाद भी हम इन्हे उल्लू बनाए रखने का कोई और रास्ता तलाश ले।"[११]

आज का नेता भाषण देने में सबसे आगे है। वह जनता को आश्वासन, वायदे तो बहुत देता है, पर उन्हें निभाता नहीं है। उनमें सत्ता पाने के लिए होडसीची है और वे इसके लिए अनेक नीतियों का करते हैं। अपने व्यक्तिगत स्वार्थ के कारण वे देश को स्थिर, सक्षम सरकार नहीं दे सकते। यहाँ पहला युवक ने तापर व्यंग्य करते हुए कहता है, "अबे लडकियों की तरह नहीं, वे तो फिर भी सकती है। आज कल की सरकारों की तरह कह, सरकारों की तरह। कब गिरती-बनती है, पता ही नही चलता।"[१२]

आज नेता को प्रजातांत्रिक शासन प्रणाली का दुरुपयोग कर रहे हैं। उनमें अनुशासन, नैतिकता का ऱ्हास हो गया है। संसद और विधानसभा का मैला बहकर रास्ते पर आ गया है। प्रस्तुत नाटक में बक्सा खोलने के लिए तीनों व्यक्ति (नेता) एक-दूसरे पर आस्तिन चढाते हैं तो पहला व्यक्ति कहता है, "देखिये भाईसाहब आपकी यह हरकत संसदीय परंपरा के विरुध्द है। आप विश्व के महान एवं गौरवशाली प्रजातंत्र के आधारस्तंभ है, अगर आप ही ऐसी अशोभनीय हरकते करेंगे तो इस युवा पिढी का क्या होगा, जो आपकी ओर आशा भरी नजरों से देख रही है।"[१३] देश में भूखमरी, नंगापन, बेकारी की समस्या बढती जा रही है । और उनके निर्मूलन के लिए बार-बार अंतर्राष्ट्रीय उच्च स्तरिय आयोगों का गठन किया जा रहा है। पर इससे इन स्थितियों में सुधार की कोई आशा नहीं है। इस पर व्यर्थ में ही व्यय हो रहा है।"[१४]

देश में गरीबी हटाने के नाम पर अनेक शासकीय योजनाएँ कार्यान्वित हो रही है। पर वे जनता तक पहुँच ही नहीं पाती। जनता तक पहुँचने से पहले ही ये सफेद पोशवाले उसपर झपट पडते हैं / जनता को सुरक्षित घर देने के नाम पर, गंदगी तक हटाने के नाम पर उनकी बस्तियाँ गिरायी जाती है। परंतु वहाँ एक आलिशान वास्तु जन्म लेती है और उपहास से वे कहते हैं कि गांधीजी का सपना साकार करना है।[१५]

इस प्रकार ये सारे संदर्भ बक्से का ताला खोलने की घटना के परिप्रेक्ष्य में उभरते हैं। बक्सा, ताला, कुर्सी, नर-कंकाल ये सारे प्रतीकात्मक संदर्भ है। नाटक में से संदर्भ अधिक तर घटना-प्रसंगों के रुप में नहीं, बल्कि संवादों के रुप में उभरते जाते है। इसमें तीन युवक युवा पिढी के प्रतिनिधि है और तीन व्यक्ति नेता के प्रतिनिधि है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

१. विभुकुमार-तालों में बंद प्रजातंत्र, पृ.५०
२. विभुकुमार-तालों में बंद प्रजातंत्र, पृ.५२
३. विभुकुमार-तालों में बंद प्रजातंत्र, पृ.८१
४. विभुकुमार-तालों में बंद प्रजातंत्र, पृ.८२
५. विभुकुमार-तालों में बंद प्रजातंत्र, पृ.७८
६. विभुकुमार-तालों में बंद प्रजातंत्र, पृ.७८
७. विभुकुमार-तालों में बंद प्रजातंत्र, पृ.८०
८. विभुकुमार-तालों में बंद प्रजातंत्र, पृ.५६
९. विभुकुमार-तालों में बंद प्रजातंत्र, पृ.४९
१०. विभुकुमार-तालों में बंद प्रजातंत्र, पृ.५४
११. विभुकुमार-तालों में बंद प्रजातंत्र, पृ.३१
१२. विभुकुमार-तालों में बंद प्रजातंत्र, पृ.३६
१३. विभुकुमार-तालों में बंद प्रजातंत्र, पृ.२७-२८
१४. विभुकुमार-तालों में बंद प्रजातंत्र, पृ.६९
१५. विभुकुमार-तालों में बंद प्रजातंत्र, पृ.३७